

पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय

28-जनवरी-2019 18:09 IST

नई दिल्ली में एनसीसी रैली में प्रधानमंत्री के भाषण का मूल पाठ

भारत माता की जय

भारत माता की जय

भारत माता की जय

भारत माता की जय

मंत्रिमंडल की मेरी सहयोगी, देश की प्रथम महिला जो रक्षा मंत्रालय को संभालती हैं। श्रीमती निर्मला सीतारमण जी, डॉ. सुभाष भामरे जी, तीनों सेनाओं के उच्च पदाधिकारीगण NCC के महानिदेशक, विदेशों से आए हुए हमारे मेहमान और NCC की महान परंपरा का हिस्सा आप सब मेरे युवा साथी।

National Cadets Corps के गणतंत्र दिवस शिविर में एक बार फिर आपके बीच आना हर बार की तरह आनंदित कर रहा है। जब भी मैं आपके साथ बातचीत करने के लिए आता हूँ तो अतीत की अनेक यादें मन मस्तिष्क में उभर आती हैं। जोश और अनुशासन ये जो दिन आप जी रहे हैं, मुझे भी इन क्षणों को जीने का अवसर मिला है। एक Cadet के तौर पर बिताए वो दिन आज तक मेरे संकल्प को, मेरी प्रेरणा को ऊर्जा दे रहे हैं।

साथियों, इस कैंप का अपने आप एक गौरवशाली अतीत भी है और भविष्य को लेकर इसका बहुत बड़ा महत्व भी है। इस कैंप का हिस्सा बने आप सभी केडिट्स को मैं बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएं देता हूँ। पिछले वर्ष जब मैं आपके बीच आया था तो मैंने आपसे कुछ आग्रह किया था। देश और समाज से जुड़े महत्वपूर्ण विषयों में सक्रिय योगदान के लिए आपसे अपील की थी।

मुझे खुशी है कि बीते वर्ष NCC के Cadets ने अनेक महत्वपूर्ण कदमों के साथ खुद को जोड़ा। स्वच्छ भारत अभियान हो, digital transaction हो, बेटी बचाओ - बेटी अभियान हो, पर्यावरण से जुड़े मुद्दे हो। जन-जागरण के अनेक ऐसे मुद्दों को लेकर आपके प्रयास प्रशंसनीय हैं।

विशेष तौर पर केरल में भीषण बाढ़ के बाद राहत और बचाव कार्यों में NCC के केडिट्स का योगदान बहुत सराहनीय है। सहयोग और समर्पण का ये पाठ आपने यहां सीखा है उसको आपने केरल में मुश्किल में फसे स्वजनों को राहत देने में अमल में लाया। मुझे विश्वास है कि आप इसी प्रकार अपने दायित्वों को निभाते रहेंगे।

साथियों, दो दिन पहले ही हमारे गणतंत्र ने 70वें वर्ष में कदम रखा है। पहले राजपथ पर और आज यहां पर आपके चेहरे की चमक और आपके अनुशासन की झलकियां नजर आईं और उन झलकियों में मुझे नए भारत का कदम ताल दिखता है। पूरे आत्मविश्वास के साथ सीना चौड़ा किए, मस्तिष्क को ऊंचा रखे, राष्ट्र के गौरव के लिए तत्पर ये असीम ऊर्जा उत्साह

देने वाले होते हैं। आपका ये जोश, आपका ये उत्साह ही है जिसके कारण भारत आज नए आत्मविश्वास से भरा है। आज दुनिया कह रही है कि भारत न सिर्फ संभावनाओं से भरा हुआ देश है बल्कि उनको साकार भी कर रहा है।

साथियों, देश की अर्थव्यवस्था हो या फिर दुश्मन से निपटने का हमारा सामर्थ्य, हर स्तर पर हमारी क्षमताओं का विस्तार हुआ है। हमारी सेना ने ये स्पष्ट संदेश दिया है कि हम छोड़ते नहीं हैं लेकिन किसी ने अगर छोड़ा तो हम उसे छोड़ते भी नहीं हैं। हम शांति के प्रबल समर्थक हैं। लेकिन राष्ट्र रक्षा के लिए कोई भी कदम उठाने में हम चूकेगें नहीं। यही कारण है कि बीते साढ़े चार वर्षों में देश की रक्षा और सुरक्षा को सर्वोपरि मानते हुए अनेक महत्वपूर्ण फैसले लिए गए हैं।

साथियों, भारत दुनिया के उन चुनिंदा देशों में शामिल हुआ है जिसके पास जल, थल और नभ से परमाणु हमले और आत्मरक्षा करने की क्षमता है। इसके अलावा, दशकों से लटके पड़े लड़ाकू विमानों और आधुनिक तोपों से जुड़े समझौतों को जमीन पर उतारा गया है। देश में भी मिसाइल से लेकर टैंक, गोला बारूद और हेलीकॉप्टर बनाए जा रहे हैं। मैं, आप युवा साथियों को आश्वस्त करता हूँ कि आने वाले समय में हर वो बड़ा और कड़ा फैसला लिया जाएगा जो राष्ट्र की सुरक्षा के लिए जरूरी है। अगर राष्ट्र सुरक्षित रहेगा, सक्षम रहेगा तभी युवा अपने सपने साकार कर पाएगा।

साथियों, आप यहां देश के अलग-अलग क्षेत्रों से आए हैं। आप में से अनेक छोटे-छोटे गांवों से और कस्बों से अलग-अलग पृष्ठभूमि से हैं। मुझे आप सभी के परिश्रम का अहसास है। आपके समर्पण का अहसास है। मैं आपको सिर्फ यही कहूंगा कि यही परिश्रम हम सभी को समृद्ध बनाता है। हमारी नींव को ठोस करता है। परिश्रम का क्या परिणाम होता है ये जानने के लिए NCC के आप केडिट्स को बहुत दूर जाने की जरूरत नहीं है। आपके भीतर से ही अनेक साथियों ने हाल में ही अदभूत हौसला दिखाते हुए देश को गौरव के पल दिए हैं।

पर्वतारोहण और ट्रेकिंग जैसी साहसिक गतिविधियां हों या फिर खेल के मैदान पर तिरंगा लहराने का काम, अनेक केडिट्स आगे आए हैं। North East Directorate की Cadet हिमा दास को तो आज दुनिया गौरवपूर्ण रूप से जानने लगी है। धान के खेतों में दौड़ते-दौड़ते, खेतों की पगडंडियों पर संतुलन साधने हुए हिमा दास आज इस स्तर पर पहुंची हैं। अभाव को अवसर बनाते हुए हिमा ने पहले जूनियर एथलेटिक चैंपियनशिप में और फिर एशियाई खेलों में देश को गौरवान्वित किया है। ऐसी अनेक युवा प्रतिभाओं को जब मैं देखता हूँ, जब उनसे मिलता हूँ। मेरा भरोसा तो मजबूत होता ही है। इस भरोसे को और सशक्त करने की ऊर्जा भी मिलती है।

साथियों, सपने देखना और आकांक्षाओं को उड़ान देना यही युवा की पहचान होती है यही उसकी स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है। अपने सपनों और आकांक्षाओं को और ऊंचा उड़ने दीजिए। अपने प्रयासों का पूरा विस्तार दीजिए। वर्तमान सरकार देश के हर युवा को हर सपने देखने वालों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर के खड़ी है और कदम से कदम मिलाकर के चलने के लिए तैयार है। नया भारत हर कर्मयोगी को सम्मान देगा, अवसर देगा। आप सभी साथी जब देश की work force में जाने के लिए तैयार हैं। तब मैं आपको ये भरोसा देना चाहता हूँ। आपने किस परिवार में जन्म लिया, आपकी जान-पहचान किससे है, आपकी आर्थिक स्थिति कैसी है इसके आधार पर आपका भविष्य तय नहीं होता। आपका कौशल, आपका आत्मविश्वास, आपके पैर के छाले ही आपको परिणाम देने वाले हैं।

साथियों, इस परंपरा को तोड़ने के लिए समाज में हर प्रकार के असंतुलन, असमानता को बांटने के लिए एक सार्थक प्रयास जरूरी है। वीआईपी नहीं ईपीआई यानी every person is important इस संस्कार को मजबूत करने का प्रयास लगातार हो रहे हैं। गाड़ी के ऊपर से लाल बत्ती हटाई गई है। अब दिमाग से भी इसको हटाने की कोशिश की जा रही है। आप आश्वस्त रहें आपके सपनों को आपकी आकांक्षाओं को सिर्फ अभावों और परिस्थितियों के कारण समाप्त नहीं होने दिया जाएगा।

साथियों, अवसरों की समानता की जब-जब बात आती है तो एक महत्वपूर्ण विषय हमारी बेटियों से भी जुड़ा है। मेरे सामने बैठे आप तमाम केडिटस चाहे वो बेटे हों या फिर बेटियां, आपके जोश में और आपके सामर्थ्य में कोई अंतर नहीं है। बेटियों को हर प्रकार के अवसर से जोड़ना हमारी सरकार की प्राथमिकता है। बीते साढ़े चार वर्षों में बेटियों को work force में प्रोत्साहन देने के लिए अनेक कदम उठाए गए हैं। श्रम, सेवा और उदयम के साथ-साथ देश के defence को भी हमारी नारी सशक्त कर रही है। इसके लिए कई ऐतिहासिक कदम उठाए गए हैं। पहली बार हमारी बेटियां fighter pilot बनी हैं। तारिणी के गौरव को पूरी दुनिया ने देखा है। अब सेना में भी बेटियों की भागीदारी को और मजबूत करने के लिए बड़ा फैसला लिया गया है। Military Police की total corps में 20 प्रतिशत की महिलाओं की भर्ती के लिए कदम उठाए जा रहे हैं।

साथियों, नारी शक्ति का दम बीते साढ़े चार वर्षों में राजपथ पर भी देखा है। पिछली बार महिला स्पोर्ट्स दस्ता राजपथ पर उतरा था तो इस साल देश के इतिहास में पहली बार महिला जवानों की पूरी टुकड़ी परेड में शामिल हुई है। देश तो ये भी पहली बार देखा कि पुरुष टुकड़ी का नेतृत्व एक बेटे ने किया है। बेटियां समाज के हर क्षेत्र में लीड करें, इसके लिए बेहतर माहौल बनाने का प्रयास किया जा रहा है। बीते साढ़े चार वर्ष की पूरी तस्वीर को आप देखेंगे तो आपको आश्वासन मिलेगा कि अब नारी सशक्तिकरण बेटियों की उपयुक्त भागीदारी पर चर्चा नहीं एकशन हो रहा है।

साथियों, अवसरों की समानता के रास्ते में भ्रष्टाचार भी एक बहुत बड़ी बाधा है। घूसखोरी, भाई-भतीजावाद, अपना-पराया हमारी व्यवस्था में इनके लिए कोई स्थान होना नहीं चाहिए।

भ्रष्टाचार, नये भारत का संस्कार हो ही नहीं सकता। मेरा और मेरी सरकार की सोच और action दोनों इस बात के साक्षी हैं कि भ्रष्ट आचरण करने वाला, कितना भी बड़ा हो, कितना भी ताकतवर क्यों न हो, कोई भी नहीं बचेगा। अपनी पहुंच से प्रक्रियाओं को प्रभावित करने वालों को, दलालों और बिचौलियों के माध्यम से हर फैसले, हर फाइल की बोली लगाने वालों को, गरीब से गरीब व्यक्ति के हक को लूटने वालों की सफाई करने में मैं पूरी क्षमता और ईमानदारी से जुटा हूँ।

साथियों, आज सरकार जो कुछ भी कर पा रही है, उसके पीछे आप सभी युवा साथियों का सक्रिय योगदान है। स्वच्छ भारत से देश में स्वच्छता का आंदोलन आपने आगे बढ़ाया। नोटबंदी जैसे कड़े फैसले से भ्रष्टाचार के विरुद्ध लड़ाई को आपने समर्थन दिया। डिजिटल इंडिया के माध्यम से ईमानदार और पारदर्शिता व्यवस्था बनाने में आपकी बहुत बड़ी भूमिका है। यानि हर योजना को आपने सरकार बनने से बचाया है। एक और आग्रह आपसे है, देश की विरासत, देश के राष्ट्र नायकों की स्मृति से जुड़ा हुआ बीते तीन चार वर्षों में यहां दिल्ली में ऐसे अनेक और पवित्र स्थल बनाये गये हैं, जहां आप जाएंगे तो बहुत कुछ सीखने को मिलेगा। हो सकता है आप में से कुछ लोग इन जगहों पर हो आए हों। लेकिन फिर भी आपको इनके बारे में बताना चाहता हूँ। जैसे अभी हाल में ही लाल किले में क्रांति मंदिर का लोकार्पण किया गया है। यह क्रांति मंदिर नेताजी सुभाष चंद्र बोस को समर्पित है। जब आप वहां जाएंगे तो आपको यह भी जानकारी मिलेगी कि आजाद हिन्द फौज और लाल किले का क्या संबंध है। इसी तरह पिछले साल राष्ट्रीय पुलिस स्मारक का भी लोकार्पण हुआ है। देश के आंतरिक इलाकों में कानून व्यवस्था को बनाए रखने के लिए शहीद हुए हजारों पुलिस और सुरक्षाबलों की स्मृति में इस स्मारक का निर्माण हुआ है। आप सभी अलीपुर रोड पर बने बाबा साहेब भीम राव अम्बेडकर के परिनिर्वाण स्थल पर भी जा सकते हैं।

साथियों, यह जगह है दिल्ली की नई पहचान बन रही है। सरदार पटेल का नया स्मारक दिल्ली में बना है। डिजिटल म्यूजियम बनाया गया है। इन जगहों पर आपको इतिहास से जुड़ी, अनेक महान व्यक्तित्वों से जुड़ी जानकारियां तो मिलेगी ही देश के लिए काम करने की, समाज के लिए काम करने की एक नई ऊर्जा भी मिलेगी। मुझे विश्वास है कि आपकी इस ऊर्जा से New India का नया जोश और बुलंद होगा। आने वाले महीने में एक और नजराना और एक प्रेरणा स्थल लम्बे इंतजार के बाद देश को सुपुर्द होने वाली है। आजादी के बाद देश के लिए मरने-मिटने वाले हमारे वीर जवान, हमारे सेना के जवान एक राष्ट्रीय स्तर का War Memorial देश की इसकी प्रतीक्षा कर रहा था, देश के जवान प्रतीक्षा कर रहे थे। वीरों के परिवारजनों की स्वाभाविक प्रतीक्षा, लम्बे अरसे से वो भी अटका पड़ा था। यह काम सालों पहले होना चाहिए था। लेकिन सरकार में आने के बाद हमने वाले फैसला लिया अब वो पूर्णता पर है और फरवरी महीने में देश के वीर, बलिदानियों जिन्होंने उच्च बलिदान दिया है, सर्वोच्च बलिदान दिया है, ऐसे वीरों की स्मृति में भारत के एक राष्ट्रीय स्तर का war memorial करीब-करीब तैयार हो चुका है। फरवरी के महीने में उसे भी लोकार्पण करने का अवसर मिलेगा और देश के हमारे वीर जवानों को सम्मानित करने का सौभाग्य मिलेगा। मैं फिर एक बार आप सबको बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूँ। यह अवसर हमारी सोच को बदलता है, महीने भर का यह वास्तव्य एक प्रकार की हमारी हर सोच को राष्ट्रीय स्तर पर ले जाती है। हर सोच में हम हमारे देश के लिए क्या सोचते हैं। सिर्फ अपना गांव, अपना मोहल्ला, अपनी जाति, अपनी

बिरादरी नहीं देश के संदर्भ में सोचने के लिए यह अवसर देता है। किसी भी देश का बड़ा बनना, आगे बढ़ना इस बात पर निर्भर है कि वहां के लिए समाज व्यवस्था में एकता का सूत्र कैसे बंधे हुए लोग हो। उस राष्ट्र की प्रगति का दूसरा आधार है वो कितना आशावादी है, कितनी आकांक्षाओं से भरा हुआ है। निराशा की गर्त में डूबा हुआ समाज न कभी खुद को ऊपर ले जा सकता है, न देश को ऊपर ले जा सकता है। आज मैं गर्व के साथ कहता हूँ सवा सौ करोड़ हिन्दुस्तानी नयी आशाओं और आकांक्षाओं से भरे हुए, और इसके कारण मुझे लगता है कि मेरा देश नई ऊंचाईयों को पार करके रहेगा। सपनों को साकार करके रहेगा। और जिन सपनों को ले करके आजादी के दीवानों ने, आजादी की जंग लड़ी थी, उन सपनों को पूरा करने का वक्त अब शुरू हो चुका है। आइये, हम सब मिल करके भारत माता की जयकार का गान करते हुए उन सपनों को एक नई ऊर्जा दें, नयी ताकत दें, नया संकल्प करें। मेरी साथ बोलें -

भारत माता की जय।

भारत माता की जय।

भारत माता की जय।

बहुत-बहुत धन्यवाद।

अतुल तिवारी/ शाहबाज़ हसीबी/बाल्मीकि महतो/ममता/तारा

प्रधानमंत्री कार्यालय

पुलवामा में आतंकी हमले पर प्रधानमंत्री का वक्तव्य

प्रविष्टि तिथि: 15 FEB 2019 1:22PM by PIB Delhi

पुलवामा आतंकी हमले के दोषियों को सजा दी जाएगी: प्रधानमंत्री

प्रधानमंत्री ने हमले के दोषियों और आतंकियों को मदद करने और उन्हें उकसाने वालों को चेतावनी देते हुए कहा कि उन लोगों ने बहुत बड़ी गलती की है और उन्हें इसकी भारी कीमत चुकानी होगी।

सुरक्षाबलों को कार्रवाई करने के लिए पूरी छूट दी गई है: प्रधानमंत्री

प्रधानमंत्री ने पाकिस्तान को चेतावनी दी कि वह इस भ्रम में न रहे कि वह भारत को अस्थिर कर सकता है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा है कि पुलवामा आतंकी हमले के दोषियों को सजा दी जाएगी। उन्होंने चेतावनी दी है कि हमले के दोषियों और आतंकियों को मदद करने और उन्हें उकसाने वालों ने बहुत बड़ी गलती की है और उन्हें इसके लिए भारी कीमत चुकानी पड़ेगी। प्रधानमंत्री ने सुरक्षाबलों को कार्रवाई करने के लिए पूरी छूट देने की बात करते हुए पाकिस्तान को चुनौती दी है कि वह इस भ्रम में न रहे कि वह भारत को अस्थिर कर सकता है।

प्रधानमंत्री ने यह बात नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से नई दिल्ली और वाराणसी के बीच वंदे भारत एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाने से पहले वहां मौजूद लोगों को संबोधन के दौरान कही। भाषण की शुरुआत में पुलवामा में आतंकी हमले के बारे में प्रधानमंत्री के वक्तव्य का अंश इस प्रकार है-

“सबसे पहले मैं पुलवामा के आतंक के हमले में शहीद जवानों को आदरपूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। उन्होंने देश की सेवा करते हुए अपने प्राण न्योछावर किए हैं। दुख की इस घड़ी में मेरी और हर भारतीय की संवेदनाएं उनके परिवार के साथ हैं।

इस हमले की वजह से देश में जितना आक्रोश है, लोगों का खून खोल रहा है; ये मैं भलीभांति समझ पा रहा हूं। इस समय जो देश की अपेक्षाएं हैं, कुछ कर गुजरने की भावनाएं हैं, वो भी स्वाभाविक हैं। हमारे सुरक्षा बलों को पूर्ण स्वतंत्रता दे दी गई है। हमें अपने सैनिकों के शौर्य पर, उनकी बहादुरी पर पूरा भरोसा है। मूझे पूरा भरोसा है कि देशभक्ति के रंग में रंगे लोग सही जानकारी भी हमारी एजेंसियों तक पहुंचाएंगे ताकि आतंक को कुचलने में हमारी लड़ाई और तेज हो सके।

मैं आतंकी संगठनों को और उनके सरपरस्तों को कहना चाहता हूं कि वे बहुत बड़ी गलती कर चुके हैं, बहुत बड़ी कीमत उनको चुकानी पड़ेगी।

मैं देश को भरोसा देता हूं कि हमले के पीछे जो ताकते हैं, इस हमले के पीछे जो भी गुनहगार हैं, उन्हें उनके किए की सजा अवश्य मिलेगी। जो हमारी आलोचना कर रहे हैं, उनकी भावनाओं का भी मैं आदर करता हूं। उनकी भावनाओं को मैं भी समझ पाता हूं और आलोचना करने का उनका पूरा अधिकार भी है।

लेकिन मेरा सभी साथियों से अनुरोध है कि ये वक्त बहुत ही संवेदनशील और भावुक पल है। पक्ष में या विपक्ष में, हम सब राजनीतिक छिंटकशी से दूर रहें। इस हमले का देश एकजुट हो करके मुकाबला कर रहा है, देश एक साथ है, देश का एक ही स्वर है और यही विश्व में सुनाई देना चाहिए क्योंकि लड़ाई हम जीतने के लिए लड़ रहे हैं।

पूरे विश्व में अलग-थलग पड़ चुका हमारा पड़ोसी देश अगर ये समझता है कि जिस तरह के कृत्य वो कर रहा है, जिस तरह की साजिशें रच रहा है, उससे भारत में अस्थिरता पैदा करने में सफल हो जाएगा तो वो ख्वाब हमेशा-हमेशा के लिए छोड़ दे। वो कभी ये नहीं कर पाएगा और न कभी ये होने वाला है।

इस समय बड़ी आर्थिक बदहाली के दौर से गुजर रहे हमारे पड़ोसी देश को ये भी लगता है कि वो ऐसी तबाही मचाकर भारत को बदहाल कर सकता है; उसके ये मंसूबे भी कभी पूरे होने वाले नहीं हैं। वक्त ने सिद्ध कर दिया है कि जिस रास्ते पर वो चले हैं, वो तबाही देखते चले हैं और हमने जो रास्ता अख्तियार किया है, वो तरक्की करता चला जा रहा है।

130 करोड़ हिन्दुस्तानी ऐसी हर साजिश, ऐसे हर हमले का मुंहतोड़ जवाब देगा। कई बड़े देशों ने बहुत ही सख्त शब्दों में इस आतंकी हमले की निंदा की है और भारत के साथ खड़े होने की, भारत को समर्थन की भावना जताई है।

मैं उन सभी देशों का आभारी हूँ और सभी से आह्वान करता हूँ कि आतंकवाद के खिलाफ सभी मानवतावादी शक्तियों को एक हो करके लड़ना ही होगा, मानवतावादी शक्तियों ने एक हो करके आतंकवाद को परास्त करना ही होगा।

आतंक से लड़ने के लिए जब सभी देश एकमत, एक स्वर, एक दिशा से चलेंगे तो आतंकवादक कुछ पल से ज्यादा नहीं टिक सकता है।

साथियों, पुलवामा हमले के बाद अभी मनःस्थिति और माहौल दुख के साथ आक्रोश से भरा हुआ है। ऐसे हमलों का देश डटकर मुकाबला करेगा। ये देश रुकने वाला नहीं है। हमारे वीर शहीदों ने अपने प्राणों की आहुति दी है। और देश के लिए मर-मिटने वाला हर शहीद दो सपनों के लिए जिंदगी लगाता है- पहला, देश की सुरक्षा, दूसरा, देश की समृद्धि। मैं सभी वीर शहीदों को, उनकी आत्मा को नमन करते हुए, उनके आशीर्वाद लेते हुए, मैं फिर एक बार विश्वास जताता हूँ कि जिन दो सपनों को ले करके उन्होंने जीवन को आहुति किया है, उन सपनों को पूरा करने के लिए हम जीवन का पल-पल खपा देंगे। समृद्धि के रास्ते को भी हम और अधिक गति दे करके, विकास के रास्ते को और अधिक ताकत दे करके, हमारे इन वीर शहीदों की आत्मा को नमन करते हुए आगे बढ़ेंगे और उसी सिलसिले में मैं वंदे भारत एक्सप्रेस के concept और डिजाइन से लेकर इसको जमीन पर उतारने वाले हर इंजीनियर, हर कामगार का आभार व्यक्त करता हूँ।”

AKT/SH/SKS

(रिलीज़ आईडी: 1564701) आगंतुक पटल : 691

प्रधानमंत्री कार्यालय

केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के 50वें स्थापना दिवस समारोह में प्रधानमंत्री के भाषण का प्रारम्भिक मूल पाठ

प्रविष्टि तिथि: 10 MAR 2019 4:27PM by PIB Delhi

देश की संपदा और सम्मान की रक्षा,
सुरक्षा में जुटे CISF के सभी साथी,
यहां उपस्थिति सभी वीर परिवारजन,
देवियों और सज्जनों !!!

स्वर्ण जयंती के इस महत्वपूर्ण पड़ाव पर पहुंचने के लिए आप सभी को बहुत-बहुत बधाई!!

एक संगठन के नाते आपने जो 50 वर्ष पूरे किए हैं, वो अपने आप में बहुत प्रशंसनीय उपलब्धि है। और इस कार्य को यहां तक पहुंचाने में, आज जो CISF की व्यवस्था में हैं, उनका तो योगदान है ही, लेकिन 50 साल के कालखंड में जिन-जिन महानुभावों ने अपना दायित्व निभाया है, इसका नेतृत्व किया है। एक Institution को लगातार नई ऊँचाइयों पर ले जाने का काम किया है, इससे जुड़े हुए Human resource development, इसकी भरसक कोशिश की है और इसलिए आज जहाँ हम इसके 50 वर्ष मना रहे हैं तब, ये golden jubilee बना रहे हैं तब वे भी अभिनंदन के अधिकारी हैं जिन्होंने पचास साल तक कभी न कभी इस institute को आगे बढ़ाने में अपना योगदान दिया है, उसमें से कुछ महानुभाव यहां उपस्थित हैं। मैं उनका गौरव गान करता हूँ, मैं उनका अभिनंदन करता हूँ। देश की ऐसी महत्वपूर्ण इकाई को इतनी ऊँचाइयों पर ले जाने के लिए वे सचमुच में अनेक-अनेक अभिनंदन के अधिकारी हैं।

लेकिन भाईयों और बहनों, आपकी ये उपलब्धि इसलिए और महत्वपूर्ण बन जाती है क्योंकि जब पड़ोसी बहुत hostile हो, युद्ध लड़ने की उसकी क्षमता न हो और भारत के भीतर ही अलग अलग प्रकार के षड़यंत्रों को, वहां से पनाह मिलती हो, बल मिलता हो, आतंक का रूप, धिनौना रूप अलग-अलग स्वरूप में प्रकट होता है, तब ऐसी मुश्किल चुनौती के बीच देश की रक्षा, देश के संसाधनों की रक्षा, देश के संसाधनों की रक्षा और सुरक्षा ये अपने आप में एक बड़ी चुनौती होती है।

थोड़ी देर पहले जब यहां परेड चल रही थी तो मैं वो ऊर्जा, वो संकल्प अनुभव कर पा रहा था, जो वैभवशाली भारत के निर्माण के लिए आवश्यक है। इस शानदार प्रदर्शन के लिए मैं परेड कमांडर, परेड में शामिल सभी जवानों और अधिकारियों को बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। आज यहां पर अनेक साथियों को उनकी उत्कृष्ट सेवा के लिए मेडल भी दिए गए हैं। इसके लिए आपको बधाई। इसके अलावा गणतंत्र दिवस पर घोषित पुलिस पदक और जीवन रक्षक पदक विजेताओं को भी मैं बधाई देता हूँ।

साथियों, CISF से जुड़े आप सभी लोगों ने राष्ट्र की संपदा को सुरक्षित रखने में अहम भूमिका निभाई है। नए भारत की नई और आधुनिक व्यवस्थाओं को सुरक्षित करने के लिए, देश की आशाओं और आकांक्षाओं को सशक्त करने के लिए आप निरंतर आगे बढ़ रहे हैं।

हम जानते हैं कि बहुत सारी सुरक्षा की व्यवस्थाएं हैं, उसका formation, mechanism, structure, ये अंग्रेजों के जमाने से हमें विरासत में मिला है। समयानुकूल उसमें परिवर्तन भी हुए। लेकिन बहुत कम संस्थाएं ऐसी हैं जिन्होंने आवश्यकता के अनुसार आजादी के बाद जन्म लिया। वे एक प्रकार से स्वतंत्र

भारत की पैदाइश है। स्वतंत्र भारत की सोच की पैदाइश है। स्वतंत्र भारत के सपनों को साकार करने के लिए पैदाइश हुई है। और उसमें CISF एक बहुत महत्वपूर्ण इकाई है। और इसलिए इसका जन्म, लालन-पालन, इसका विकास, इसका विस्तार, ये सारी बातें धीरे-धीरे एक प्रकार से progressive unfoldment के रूप में जिन जिन लोगों ने इसका नेतृत्व किया है। इन्होंने इसको आगे बढ़ाया है और यह एक प्रकार से golden jubilee year में सबसे बड़े गौरव की बात है।

ऐसी संस्था, शासन में बैठे हुए लोग कैबिनेट में बैठकर एक फाइल को मंजूर कर दें, ऐसा नहीं होता, पचास साल तक लगातार हजारों लोगों ने आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर ही इसे विकसित किया है तब जाकर के ही ऐसी संस्था बनती है और देश के लिए विश्वास का एक बहुत बड़ा संबल बन जाती है। और इसलिए आपको जितनी बधाई दें, उतनी कम है। राजेश रंजन जी कह रहे थे कि हमारे लिए सुखद है और surprise की बात है कि प्रधानमंत्री जी हमारे कार्यक्रम में आए, मेरा मन करता है, शायद मैं इसमें न आता तो मैं बहुत कुछ गवाँ देता।

पचास साल की तपस्या यह कम नहीं होती। बहुत बड़ी तपस्या होती है और एकाध घटना यानि 365 दिन आँखें खुली रखकर के, दिमाग को चौकन्ना रखते हुए, हाथ, पैर, शरीर को आठ-आठ नौ-नौ घंटों तक बराबर तैयार रखकर के सैकड़ों दुर्घटनाओं से, भयानक घटनाओं से देश को बचाया हो। और एकाध ऐसी घटना हो जाए, सारी तपस्या को पानी में मिला दे ऐसे कठिन दबाव में आप लोगों को काम करना पड़ता है और यह सामान्य काम नहीं है और मैं इस बात को भलीभाँति समझता हूँ क्योंकि प्रधानमंत्री के नाते हमें भी सुरक्षा कवच मिलता है लेकिन किसी व्यक्ति को सुरक्षा कवच देना बहुत मुश्किल काम नहीं है, माफ करना एक व्यक्ति को प्रोटेक्ट करना और उसके लिए व्यवस्था करना मुश्किल काम नहीं है, लेकिन एक इंस्टिट्यूशन को प्रोटेक्ट करना जहाँ तीस लाख लोग आते-जाते हो, जहाँ आठ लाख लोग आते-जाते हों, जहाँ हर चेहरा नया हो, हर एक का व्यवहार अलग हो, उनके सामने इस इंस्टिट्यूट को प्रोटेक्ट करना शायद कितने ही बड़े वीआईपी के प्रोटेक्शन से लाखों गुना ज्यादा मुश्किल काम है, जो आप लोग कर रहे हैं और आप उस इंस्टिट्यूशन की दीवारों को संभालते हैं।

ऐसा नहीं है, आप उसके दरवाजे पर खड़े रहते हैं, ऐसा नहीं है आप लोग भारत की विकास यात्रा की सुरक्षा कर रहे हैं, आप भारत की विकास यात्रा को एक नया विश्वास देते हैं और मेरा तो अनुभव है कि आप लोगों की सेवा में अगर सबसे बड़ी कोई कठिनाई है, सबसे बड़ी मुसीबत है तो वह मेरे जैसे लोग हैं, मेरी बिरादरी के लोग हैं, जो अपने आप को बड़े शहशाह मानते हैं। बड़ा वीआईपी मानते हैं, हवाई अड्डे पर अगर आपका जवान उनको रोक करके पूछ लेता है तो उनका पारा चढ़ जाता है, गुस्सा कर देते हैं, आपको अपमानित कर देते हैं यहां तक कहते हैं कि मैं देख लूंगा, आप हाथ पैर जोड़कर को समझाते हो कि साहब की यह मेरी इयूटी है लेकिन उसका तो पता नहीं, ये वीआईपी कल्चर होता है।

मैं एक घटना सुनाता हूँ आपको, मैं पार्टी का काम करता था तो पूरे देश में मैं भ्रमण करता था लगातार दौरा लगता रहता था एक बार हमारे सीनियर नेता भी मेरे साथ थे, अब हमारे देश में कुछ एयरपोर्ट ऐसे हैं जहाँ पर सिक्योरिटी की वजह से डबल चेक होता है, श्रीनगर है, किसी जमाने में गुवाहाटी हुआ करता था, आजकल है कि नहीं मुझे मालूम नहीं है। मेरे साथ जो हमारे सीनियर नेता थे वह बड़े थे और जाने-माने चेहरा था लेकिन जो जवान खड़ा था एयरपोर्ट पर उनको पहचान नहीं पाया तो उसने उनको रोका और रोक कर के जैसे कि उनकी ड्रिल होती है उस ड्रिल के अनुसार चेक करने लगे, जैसे-जैसे वह चेक करता रहा उनका पारा गरम होता रहा। अंदर सीट पर बैठने के बाद भी वह कम नहीं हुआ, मेरे से भी बात नहीं कर रहे थे। मैंने देखा कि क्या साइकोलॉजी है इनकी जब अगली जगह पर हमको जाना था तो मैंने कहा कि आप आगे मत चलिए, मेरे पीछे चलिए, पहले मैं चेक-इन करवाता हूँ और मैंने क्या किया कि मैं वहां गया और आपका जवान वहां खड़ा था उसके आगे मैं हाथ ऊपर करके खड़ा हो गया और मैंने कहा अरे चलो भाई जल्दी आरती उतारो तो उसने कहा कि मैं तो आपको जानता हूँ लेकिन मैंने कहा कि पहचानते हो तो क्या हुआ आरती नहीं उतारोगे तो मैं नहीं जाऊंगा। आप लोग मेटल

डिटेक्टर से ऐसे घूमाते हो न, जो मैंने उनको कहा कि आप मन में क्यों रखते हो जब चैकिंग हो रही होती है। यह सोचो कि वह आप की आरती उतार रहा है, गर्व कीजिए। इन सुरक्षा के जवानों को सहयोग दीजिए।

यह वीआईपी कल्चर सुरक्षा के लिए कभी-कभी सबसे बड़ा संकट पैदा हो जाता है और इसलिए मैं आज इस जगह पर से यह कहने की हिम्मत करता हूँ क्योंकि मैं खुद डिसिप्लिन को फॉलो करने वाला इंसान रहा, परंतु मेरा डिसिप्लिन कभी मेरे बीच में नहीं आता और यह हम सब नागरिकों का कर्तव्य होता है। आज आप डेढ़ लाख लोग हैं अगर आप 15 लाख भी हो जाएं लेकिन जब तक नागरिक डिसिप्लिन में नहीं रहता, नागरिक सहयोग नहीं करता है तो आपका काम और मुश्किल हो जाता है इसलिए इस गोल्डन जुबली ईयर में हम नागरिकों को कैसे प्रशिक्षित करें, नागरिकों को इतनी बड़ी व्यवस्था के महत्व के बारे में कैसे समझाएं, मैं समझता हूँ यह एक बहुत बड़ी आवश्यकता है और इसलिए मैं जब परेड का निरीक्षण कर रहा था तो मेरे मन में कुछ विचार चल रहे थे कि आज आपके साथ क्या बात करूंगा, तो मेरे मन में विचार आया कि एयरपोर्ट पर, मेट्रो स्टेशन पर हम एक डिजिटल म्यूजियम बनाएं, स्क्रीन पर लगातार चलता रहे कि सीआईएसफ का जन्म कैसे हुआ, उसका विकास और विस्तार कैसे हुआ, वह किस प्रकार से सेवा कर रहा है नागरिकों से उनकी क्या अपेक्षाएं हैं, मेट्रो में जाने वाले तीस लाख लोग कभी ना कभी तो देखेंगे। हवाई अड्डे पर आने वाले 7-8 लाख लोग कभी ना कभी तो इसे देखेंगे। उनको समझ आएगा कि यह 24 घंटे काम करने वाले लोग हैं, जरा सम्मान कीजिए इनका गौरव दीजिए, इनका आदर कीजिए, इनको प्रशिक्षित करना बहुत आवश्यक है जितना अधिक नागरिकों का प्रशिक्षण होगा उतनी ही ताकत सुरक्षाबलों की बढ़ेगी और इस काम की ओर बल देने का प्रयास मेरी तरफ से पूरा आपको सहयोग रहेगा।

सीआईएसफ में बाकी केंद्रीय बलों की तुलना में बेटियों की संख्या सबसे ज्यादा है यह देश की ताकत को निश्चित रूप से नया आयाम दे रही हैं और मैं इसलिए इस क्षेत्र में आने के लिए उन बेटियों का अभिनंदन करता हूँ, उस मां-बाप का भी अभिनंदन करता हूँ और विशेष रूप से उस मां का भी अभिनंदन करना चाहता हूँ जिस ने बेटि को यूनिफॉर्म पहना करके देश की विकास यात्रा को सुरक्षित करने का जिम्मा उठाया है। यह बेटियां लाख-लाख अभिनंदन की अधिकारी हैं।

साथियों, सुरक्षा और सेवा के जिस भाव के साथ आप आगे बढ़ रहे हैं बहुत महत्वपूर्ण है। नए भारत के लिए जो आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार किया जा रहा है, पोर्ट बन रहे हैं, एयरपोर्ट बन रहे हैं, मेट्रो का विस्तार हो रहा है, जो बड़े-बड़े उद्योग-धंधे लगाए जा रहे हैं, उनकी सुरक्षा की जिम्मेदारी आप सभी पर है। डेढ़ लाख से अधिक कर्मियों की ये मजबूत शक्ति आज देशवासियों को, भारत आने वाले दुनियाभर के नागरिकों को, सुरक्षित वातावरण देने में जुटी हैं।

साथियों, एयरपोर्ट और मेट्रो में संपूर्ण सुरक्षा का अहसास हर कोई करता है। ये सबकुछ संभव हो पा रहा है तो आपके समर्पण से, आपकी सतर्कता से, आप पर जनता के विश्वास से। अभी तो एयरपोर्ट हो या फिर मेट्रो सेवा इसमें बहुत अधिक विस्तार हो रहा है। दोनों क्षेत्रों में हम दुनिया में इस तरह की सेवा देने वाला सबसे बड़ा देश बनने की तरफ आगे बढ़ रहे हैं।

साथियों, मुझे भी अनेक बार मेट्रो में सफर करने का अवसर मिला है। तो मैं देखता हूँ कि आप सभी कितनी मेहनत करते हैं। किस प्रकार घंटों तक निरंतर आपको हर व्यक्ति पर, हर सामान पर नज़र गड़ा रखनी पड़ती है। सामान्य व्यक्ति जो इस प्रकार मेट्रो या हवाई जहाज में सफर करता है, उसको आपकी ये मेहनत दिखती है। लेकिन ये भी सही है कि अक्सर कुछ लोग सोचते हैं कि आपका काम बस इतना ही है। कोई आया, उसको देखा और छोड़ दिया बस इतना ही।

साथियों, देश को ये जानना भी जरूरी है कि CISF का हर सुरक्षा कर्मी, सिर्फ चैकिंग के काम से नहीं जुड़ा है बल्कि सुरक्षा के हर पहलू और मानवीय संवेदनाओं के हर पक्ष में वह भागीदार है।

साथियों, आपदाओं की स्थिति में भी आपका योगदान हमेशा से सराहनीय रहा है। पिछले वर्ष केरल में आई भीषण बाढ़ में आप में से अनेक साथियों ने राहत के काम में, बचाव के काम में, दिन रात एक करके हजारों लोगों का जीवन बचाने में मदद की। देश में ही नहीं विदेश में भी जब मानवता संकट में आई है तब CISF ने अपनी जिम्मेदारी बखूबी निभाई है। नेपाल और हैती में भूकंप के बाद आपके योगदान की सराहना अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी हुई है। इतना ही नहीं, मुझे बताया गया है कि सफर के दौरान परिवार से बिछड़े हुए लोगों को, बच्चों को अपने परिवारों से मिलाने या फिर उनको सही जगह तक पहुंचाने का काम आप सभी पूरी संवेदना के साथ कर रहे हैं। इसी प्रकार बेटियों को सुरक्षित वातावरण देने के लिए भी आपके प्रयास बहुत ही प्रशंसनीय हैं। इन्हीं सब कारणों से आपको देश का इतना विश्वास मिला है।

साथियों, आज के इस अवसर पर जब हम इस महत्वपूर्ण पड़ाव पर पहुंचे हैं, तब हमें अपने उन सहयोगियों को भी याद करना चाहिए जो अपनी इयूटी के लिए, देश की सुरक्षा के लिए सर्वोच्च बलिदान दिया है, देश की सुरक्षा के लिए शहीद हो गए। आतंक और हिंसा को बढ़ावा देने वाली ताकतों से, आपने देश को, हमारी अमूल्य धरोहर, हमारी संपदा को बचाने के लिए सर्वोच्च त्याग किया है, बलिदान दिया है। CISF हो, CRPF सहित दूसरे सशस्त्र बल हों, आपके समर्पण, आपके बलिदान से ही आज नए भारत का सपना हम देख पा रहे हैं। अब तक केंद्रीय पुलिस बल के 4 हजार से अधिक शहीदों सहित, पुलिस के 35 हजार से ज्यादा साथियों ने सर्वोच्च बलिदान दिया है। मैं इन सभी शहीदों को श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूँ।

लेकिन मैं इन सुरक्षा बलों से जुड़े इन लोगों से कहना चाहूंगा कि मैं मन से, emotionally मैं feel करता हूँ कि खाखी वर्दी में जो ये लोग हैं उनकी मेहनत को देश में जितना मान सम्मान मिलना चाहिए, वह नहीं मिला है। जितना उनको रिकॉग्नाइज करना चाहिए, सामान्य मानवीय के द्वारा वह नहीं हुआ और इसलिए आजादी के बाद पहली बार लाल किले पर एक ऐसा प्रधानमंत्री जिसने 35 हजार से ज्यादा पुलिसकर्मियों की शहादत की वकालत की। यह मुझे करने का मन इसलिए हुआ क्योंकि सामान्य मानवीय को मालूम नहीं होता, उसके दिमाग में तो कॉस्टेबल ने उसके साथ क्या व्यवहार किया और उसी के आधार पर पूरी व्यवस्था का मूल्यांकन करता है।

हम जितना गौरव बढ़ाएंगे, हमारे सुरक्षा बलों का जितना सम्मान बढ़ाएंगे जितनी प्रतिष्ठा बनाएंगे यह देश के लिए बहुत आवश्यक है और उसी का एक हिस्सा है यह पुलिस मेमोरियल बनाना और मैं चाहता हूँ कि हर स्कूल के बच्चे को कभी न कभी वहां जाना चाहिए, वे देखें तो सही हमारे लिए मरने वाले लोग कौन हैं, जरा जाने तो सही और इसी दिशा में हमें निरंतर प्रयास करना है, इतना ही बड़ा त्याग इतनी बड़ी तपस्या राजसुरक्षा से जुड़े आप सभी लोगों का परिवार करता है, इसको शब्दों से बयान करना मुश्किल है और मुझे खुशी हुई कि जब मैं यहां खुली जीप से जा रहा था, कल मुझे मुझे तीन पीढ़ी के दर्शन करने का मौका मिला। यहां आपके परिवार की तीन-तीन पीढ़ियां मौजूद हैं। वयोवृद्ध, तपोवृद्ध लोग भी हैं। आज इस अवसर पर यहां मौजूद हैं कुछ पुराने सेवानिवृत्त लोग भी हैं आज उनके भी दर्शन करने का मुझे मौका मिला मैं इन सभी परिवारजनों को भी आदर पूर्वक नमन करता हूँ क्योंकि इन परिवारों का त्याग - बलिदान, इयूटी पर लगे हुए लोगों को काम करने की ताकत देता है।

साथियों, गर्मी हो, सर्दी हो, बरसात हो, आप अपने मोर्चे पर बिना विचलित हुए खड़े रहते हैं। देश के लिए होली, दीवाली और ईद होती है, तमाम त्योहार होते हैं, लेकिन आप सभी के लिए अपनी इयूटी ही त्योहार बन जाती है। हमारे सुरक्षाकर्मी का परिवार भी तो बाकियों की तरह ही होता है। उसके भी सपने हैं, आकांक्षाएं हैं। उसकी भी शंकाएं, आशंकाएं होती हैं। लेकिन राष्ट्र रक्षा का भाव जब मन में आ जाता है तो वो हर मुश्किल पर जीत हासिल कर लेता है। जब किसी मासूम द्वारा तिरंगे में लिपटे अपने पिता को सलामी देने की तस्वीरें सामने आती हैं, जब कोई वीर बेटा अपने जीवन साथी के जाने के दुख को, आंसुओं को पीकर, ऑडियो बाधित

.....ऐसी अलग-अलग ईकाइयों के लिए तारीख तय हो, और वहां पर बड़े अच्छे ढंग से पूरे दिन की झील का कार्यक्रम बने। उसका एक blue book जैसा प्रोटोकॉल तैयार हो, ताकि स्वाभाविक रूप से हम लोगों को इसके लिए तैयार कर सकते हैं। ऐसी कई बातें हैं, जिस पर हम आगे बढ़ सकते हैं। एक काम और करना चाहिए, मैं चाहता हूं CISF के अंदर ही एक अलग टास्कफोर्स बनाया जाए। दुनिया में आतंकवादी कैसे-कैसे नये तरीके खोज रहे हैं, कैसे नये तरीकों से ऑपरेट कर रहे हैं, किस प्रकार की टेक्नोलॉजी का उपयोग करते हैं, इसका real time अध्ययन होना चाहिए, monitoring होना चाहिए। गैस की पाइप लाइन का उपयोग आतंकवादी कितनी भंयकर घटना कर सकते हैं, दुनिया में हो रहा है। हमने, विश्व में जो प्रयोग हो रहे हैं आतंकवादियों की तरफ से इसको अध्ययन करके हमारी व्यवस्थाओं को लगातार हमने real time विकसित करना पड़ेगा। और अगर ऐसा एक dedicated task force होगा जो ऐसी चीजों का अध्ययन करेगा, और ग्लोबली करना पड़ेगा। अब आतंकवाद की कोई सीमा नहीं है। आतंकवाद हजार किलोमीटर है, दो हजार किलोमीटर है उसका कोई मतलब नहीं है, वो दुनिया के किसी भी छोर में कहीं पर भी जा करके आ धमकता है और मानवता को चुनौती है और इसलिए आप जिस काम को कर रहे हैं वहां पर चुनौती ज्यादा है।

मैं चाहूंगा कि ऐसी व्यवस्थाओं में भी सरकार ने भी आवश्यक जो भी काम करने होंगे, आपकी जो आवश्यकताएं होंगी, अपेक्षाएं होंगी, इसको पूरा करने में मेरी तरफ से कभी कोई कमी नहीं रहेगी, इस विश्वास के साथ एक बार फिर इस Golden Jubilee year पर, इस 50 वर्ष पर पूरा करने पर इस इंस्टीट्यूट को इस ऊंचाई पर ले जाने के लिए आपने जो संस्था के लिए काम किया है, इंस्टीट्यूशन के लिए काम किया है, वो तो अभिनंदन के अधिकारी है, लेकिन साथ-साथ देश में सुरक्षा का जो नया विश्वास पैदा किया है, जो दायित्व आप सबने निभाया है इसके लिए आज इस Golden Jubilee पर्व पर मैं आपको बहुत-बहुत बधाई देता हूं, बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूं। और मुझे विश्वास है कि हम सब मिल करके देश के सपनों को साकार करने में कभी कुछ कमी नहीं रखेंगे, इसी एक भाव के साथ सभी मेरे जवानों को मेरी बधाई, उनके परिवारजन को बधाई और इंस्टीट्यूट को अब तक आगे ले जाने वाले सभी महानुभावों को बहुत-बहुत बधाई देते हुए मेरी वाणी को विराम देता हूं।

मेरे साथ पूरी ताकत से यूनिफॉर्म में हो या न हो, सब लोग जोर से बोलेंगे -

भारत माता की जय।

भारत माता की जय।

भारत माता की जय।

बहुत-बहुत धन्यवाद।

अतुल कुमार तिवारी/शाहबाज़ हसीबी/बाल्मीकि महतो/तारा खंडेलवाल

(रिलीज़ आईडी: 1568507) आगंतुक पटल : 571

इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: Assamese , English , Urdu , Marathi , Bengali , Tamil

प्रधानमंत्री कार्यालय

27 जुलाई, 2019 को करगिल विजय दिवस स्मृति समारोह में प्रधानमंत्री के वक्तव्य का मूल पाठ

प्रविष्टि तिथि: 27 JUL 2019 11:03PM by PIB Delhi

रक्षामंत्री, श्रीमान राजनाथ सिंह जी; राज्य रक्षामंत्री श्रीपद नायक जी; तीनों सेनाओं के प्रमुख, दूसरे वरिष्ठ अधिकारीगण, करगिल के पराक्रमी सेनानी और उनके परिजन, यहाँ उपस्थित अन्यमहानुभाव और मेरे प्यारे भाइयो और बहनों।

करगिल विजय दिवस के इस अवसर पर आज हर देशवासी शौर्य और राष्ट्र के लिए समर्पण की एक प्रेरणादायक गाथा को स्मरण कर रहा है। आज के इस अवसर पर मैं उन सभी शूरवीरों को श्रद्धासुमन अर्पित करता हूँ, जिन्होंने करगिल की चोटियों से तिरंगे को उतारने के षडयंत्र को असफल किया। अपना रक्त बहाकर जिन्होंने सर्वस्व न्योच्छावर किया, उन शहीदों को, उनको जन्म देने वाली वीर माताओं को भी मैं नमन करता हूँ। करगिल सहित जम्मू-कश्मीर के सभी नागरिकों का अभिनंदन, जिन्होंने राष्ट्र के प्रति अपने दायित्वों को निभाया।

साथियो, 20 वर्ष पहले करगिल की चोटियों पर जो विजय-गाथा लिखी गई, वो हमारी पीढ़ियों को प्रेरित करती रहेगी और उसी प्रेरणा से बीते दो-तीन हफ्तों से देश के अलग-अलग हिस्सों में विजय दिवस से जुड़े कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। देश के सारे military stations से लेकर सीमावर्ती इलाकों, तटीय इलाकों में भी अनेक कार्यक्रम हुए हैं।

थोड़ी देर पहले यहाँ पर भी हमारे सपूतों के उस शौर्य की याद ताजा की गई। और आज की इस प्रस्तुति में अनुशासन, कठोर परिश्रम, वीरता, त्याग और बलिदान की परम्परा, संकल्प भी था और संवेदनाओं से भरे हुए पल भी थे। कभी वीरता और पराक्रम का दृश्य देख करके तालियाँ गूँज उठती थी, तो कभी उस माँ को देख करके हर किसी की आँख में से आँसू बह रहे थे। ये शाम उत्साह भी भरती है, विजय का विश्वास भी भरती है और त्याग और तपस्या के प्रति सिर झुकाने के लिए मजबूर भी करती है।

भाइयो और बहनों, करगिल में विजय भारत के वीर बेटे-बेटियों के अदम्य साहस की जीत थी; करगिल में विजय भारत के संकल्पों की जीत थी; करगिल में विजय भारत के सामर्थ्य और संयम की जीत थी; करगिल में विजय भारत की मर्यादा और अनुशासन की जीत थी; करगिल में विजय प्रत्येक देशवासी की उम्मीदों और कर्तव्यपरायणता की जीत थी।

साथियो, युद्ध सरकारें नहीं लड़तीं, युद्ध पूरा देश लड़ता है। सरकारें आती-जाती रहती हैं, लेकिन देश के लिए जो जीने और मरने की परवाह नहीं करते, वो अजर-अमर होते हैं। सैनिक आज के साथ ही आने वाली पीढ़ी के लिए अपना जीवन बलिदान करते हैं। हमारा आने वाला कल सुरक्षित रहे, इसलिए वो अपना आज स्वाहा कर देता है। सैनिक जिंदगी और मौत में भेद नहीं करते, उनके लिए तो कर्तव्य ही सब कुछ होता है। देश के पराक्रम से जुड़े इन जवानों का जीवन सरकारों के कार्यकाल से बंधा नहीं होता। शासक और प्रशासक कोई भी हो सकता है, परंतु पराक्रमी और उनके पराक्रम पर हर हिन्दुस्तानी का हक होता है।

भाइयो और बहनों, 2014 में मुझे शपथ लेने के कुछ ही महीने के बाद करगिल जाने का अवसर मिला था। वैसे मैं 20 साल पहले करगिल तब भी गया था जब युद्ध अपने चरम पर था। दुश्मन ऊँची चोटियों पर बैठ करके अपने खेल खेल रहा था। मौत सामने थी फिर भी हर हमारा जवान तिरंगा लेकर सबसे पहले घाटी तक पहुँचना चाहता था। एक साधारण नागरिक के नाते मैंने मोर्चे पर जुटे अपने सैनिकों के शौर्य को उस मिट्टी में जा करके नमन किया था। करगिल विजय का स्थल मेरे लिए तीर्थ स्थल की अनुभूति करा रहा था।

साथियो, युद्ध भूमि में तो जो माहौल था वो था, पूरा देश अपने सैनिकों के साथ खड़ा हो गया था, नौजवान रक्तदान के लिए कतारों में खड़े हो गए थे, बच्चों ने अपने गुल्लक वीर जवानों के लिए खोल दिए थे, तोड़ दिए थे। इसी दौर में अटल बिहारी वाजपेयी जी ने देशवासियों को एक भरोसा दिलाया था। उन्होंने कहा था कि जिस देश लिए जान देते हैं, हम उनकी जीवन भर देखभाल भी न कर सकें तो मातृभूमि के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करने के अधिकारी नहीं समझे जाएंगे।

मुझे संतोष है कि अटलजी के उस भरोसे को आप सभी के आशीर्वाद से हम मजबूत करने का निरंतर प्रयास कर रहे हैं। बीते पाँच वर्षों में सैनिकों और सैनिकों के परिवारों के कल्याण से जुड़े अनेक महत्वपूर्ण फैसले लिए गए हैं। आजादी के बाद दशकों से जिसका इंतजार था, उस one rank one pension को लागू करने का काम हमारी ही सरकार ने पूर्ण किया।

इस बार सरकार बनते ही पहला फैसला शहीदों के बच्चों की scholarship बढ़ाने का किया गया। इसके अलावा National War Memorial भी आज हमारे वीरों की गाथाओं से देश को प्रेरित कर रहा है। कई दशकों से उसका भी इंतजार था, उस इंतजार को भी समाप्त करने का सौभाग्य आप सबने हमें दिया।

भाइयो और बहनों, पाकिस्तान शुरू से ही कश्मीर को लेकर छल करता रहा। 1948में, 1965 में, 1971 में, उसने यही किया। लेकिन 1999में उसका छल, पहले की तरह फिर एक बार छल की छलनी कर दी गई। उसके छल को हमने छलने नहीं दिया। उस समय अटलजी ने कहा था, 'हमारे पड़ोसी को लगता था कि करगिल को लेकर भारत प्रतिरोध करेगा, विरोध प्रकट करेगा और तनाव से दुनिया डर जाएगी। हस्तक्षेप करने के लिए, पंचायत करने के लिए कुछ लोग कूद पड़ेंगे और एक नई रेखा खींचने में वो सफल होंगे। लेकिन हम जवाब देंगे, प्रभावशाली जवाब देंगे, इसकी उम्मीद उनको नहीं थी।'।

साथियो, रोने-गिड़गिड़ाने के बजाय प्रभावी जवाब देने का यही रणनीतिक बदलाव दुश्मन पर भारी पड़ गया। इससे पहले अटलजी की सरकार ने पड़ोसी के साथ जो शांति की पहल की थी, उसके कारण ही दुनिया का नजरिया बदलने लगा था। वो देश भी हमारे पक्ष को समझने लगे थे, जो पहले हमारे पड़ोसी की हरकतों पर आँख मूँदे हुए थे।

भाइयो और बहनों, भारत का इतिहास गवाह है कि भारत कभी आक्रांता नहीं रहा। मानवता के हित में शांतिपूर्ण आचरण- ये हमारे संस्कारों में है। हमारा देश इसी नीति पर चला है। भारत में हमारी सेना की छवि देश की रक्षा की है तो सारे विश्व में मानवता और शांति के रक्षक की भी है।

जब मैं इजरायल जाता हूँ तो वहाँ के नेता मुझे वो तस्वीर दिखाते हैं जिसमें भारत के सिपाहियों ने हाइफा को मुक्त कराया। जब मैं फ्रांस जाता हूँ तो वहाँ का स्मारक विश्वयुद्ध के समय भारतीयों के बलिदान की गाथा गाता है।

विश्वयुद्ध में पूरी मानवता के लिए एक लाख से ज्यादा भारतीय जवानों की शहादत को भुलाया नहीं जा सकता और विश्व ये भी नहीं भूल सकता कि संयुक्त राष्ट्र पीस कीपिंग मिशन में सर्वोच्च बलिदान देने वालों की सबसे बड़ी संख्या भारतीय सैनिकों की ही है। प्राकृतिक आपदाओं में सेना के समर्पण और सेवा की भावना, संवेदनशील भूमिका और जन-जन तक पहुँचने की क्षमता ने साल-दर-साल हर भारतीय का दिल छुआ है।

साथियो, हमारे शूरवीर, हमारी पराक्रमी सेना परम्परागत युद्ध में पारंगत है। लेकिन आज पूरा विश्व जिस स्थिति से गुजर रहा है उसमें युद्ध का रूप बदल गया है। आज विश्व, आज मानवजात छद्म युद्ध का शिकार है, जिसमें आतंकवाद पूरी मानवता को एक बहुत बड़ी चुनौती दे रहा है। अपनी-अपनी साजिशों में युद्ध में पराजित कुछ लोग छद्म युद्ध के सहारे अपना राजनीतिक मकसद पूरा करने की कोशिश कर रहे हैं, आतंकवाद को बढ़ावा दे रहे हैं।

आज समय की मांग है कि मानवता में विश्वास रखने वाली सभी शक्तियाँ सशस्त्र बलों के साथ समर्थन में खड़ी हों, तभी आतंकवाद का प्रभावी तौर पर मुकाबला किया जा सकता है।

भाइयो और बहनों, आज की लड़ाईयां अंतरिक्ष तक पहुँच गई हैं और साइबर वर्ल्ड में भी लड़ी जाती हैं। इसलिए सेना को आधुनिक बनाना, हमारी आवश्यकता है, हमारी प्राथमिकता भी है। आधुनिकता हमारी सेना की पहचान बननी चाहिए। जल हो, थल हो, नभ हो, हमारी सेना अपने-अपने क्षेत्र में उच्चतम शिखर को प्राप्त करने का सामर्थ्य रखे और आधुनिक बने, ये हमारा प्रयास है।

राष्ट्र की सुरक्षा के लिए न किसी के दबाव में काम होगा, न प्रभाव में और न ही किसी अभाव में। चाहे 'अरिहंत' के जरिए परमाणु त्रिकोण की स्थापना हो या फिर 'A-SAT' परीक्षण, भविष्य की रक्षा जरूरतों, अपने संसाधनों की सुरक्षा के लिए दबावों की परवाह किए बिना हमने कदम उठाए हैं और उठाते रहेंगे।

गहरे समंदर से लेकर असीम अंतरिक्ष तक, जहाँ-जहाँ भी भारत के हितों की सुरक्षा की आवश्यकता होगी; भारत अपने सामर्थ्य का भरपूर उपयोग करेगा। इसी सोच के साथ देश में सेना के आधुनिकीकरण का काम भी तेजी से चल रहा है।

आधुनिक राइफलों से लेकर टैंक, तोप और लड़ाकू विमान तक, हम भारत में तेजी से बना रहे हैं। डिफेंस में मेक इन इंडिया के लिए प्राइवेट सेक्टर की अधिक भागीदारी और विदेशी निवेश के लिए भी हमने प्रयास तेज किए हैं। जरूरत के मुताबिक आधुनिक अस्त्र-शस्त्र भी मँगवाए जा रहे हैं।

आने वाले समय में हमारी सेना को दुनिया का आधुनिकतम साजो-सामान मिलने वाला है। लेकिन साथियो, सेना के प्रभावी होने के लिए आधुनिकता के साथ ही एक और बात महत्वपूर्ण है। ये है jointness. चाहे वर्दी किसी भी तरह की हो, उसका रंग कोई भी हो, कोई भी पहने, लेकिन मकसद एक ही होता है; मन एक ही होता है। जैसे हमारे देश के झंडे में तीन अलग-अलग रंग हैं, लेकिन वो तीन रंग एक साथ होकर जो झंडा बनता है, जो जीने-मरने की प्रेरणा देता है। उसी तरह हमारी सेना के तीनों अंगों को आधुनिक सामर्थ्यवान होने के साथ ही व्यवहार और व्यवस्था में आपस में जुड़ना, ये समय की मांग है।

साथियो, सेना के सशक्तिकरण के साथ-साथ हम सीमा से सटे हुए गाँवों को भी राष्ट्र की सुरक्षा और विकास में भागीदार बना रहे हैं। चाहे दूसरे देशों से लगी हमारी सरहद हो या फिर समुद्री तट पर बसे गाँव, infrastructure को मजबूत किया जा रहा है। हमें ये भलीभाँति एहसास है कि सीमा पर बसे गाँवों को परेशानी का सामना करना पड़ता है। मुश्किल परिस्थितियों के कारण सीमा पर बसे लोगों को पलायन के लिए मजबूर होना पड़ता है।

इस स्थिति को बदलने के लिए बीते पाँच वर्ष में Border Area Development Program को सशक्त किया गया। देश के 17 राज्यों को साढ़े चार हजार करोड़ रुपये से अधिक की मदद इसी एक काम के लिए दी गई है।

जम्मू-कश्मीर में अंतरराष्ट्रीय सीमा से सटे लोगों को आरक्षण- ये भी इसी कड़ी में लिया गया एक अहम फैसला है। मुझे पूरा विश्वास है कि देश के हर नागरिक और अपने शूरवीरों के साझा प्रयासों से देश की सुरक्षा अभेद्य है और अभेद्य रहेगी। जब देश सुरक्षित होगा, तभी विकास की नई ऊँचाइयों को छू पाएगा। लेकिन राष्ट्र निर्माण के पथ पर हमें कुछ बातों का भी ध्यान रखना होगा।

भाइयो और बहनों, 1947 में क्या सिर्फ एक भाषा विशेष बोलने वाले आजाद हुए थे या सिर्फ एक पंथ के लोग आजाद हुए थे? क्या सिर्फ एक जाति के लोग आजाद हुए थे? जी नहीं, पूरा भारत आजाद हुआ था।

जब हमने अपना संविधान लिखा था तो क्या सिर्फ एक भाषा, पंथ या जाति के लोगों के लिए लिखा था? जी नहीं, पूरे भारत के लिए लिखा था। और जब 20 साल पहले हमारे 500 से अधिक वीर सेनानियों ने करगिल की बर्फीली पहाड़ियों में कुर्बानियाँ दी थीं, तो किसके लिए दी थीं? वीर चक्र पाने वाले तमिलनाडु के रहने वाले, बिहार रेजिमेंट के मेजर सर्वाणनहीरो ऑफ बटालिक ने किसके लिए वीरगति पाई थी? वीर चक्र पाने वाले, दिल्ली के रहने वाले राजपूताना राइफल्स के कैप्टन हनीफ उद्दीन ने किसके लिए कुर्बानी दी थी? और परमवीर चक्र पाने वाले, हिमाचल प्रदेश के सपूत, जम्मू एंड कश्मीर राइफल्स के कैप्टन विक्रम बत्रा ने जब कहा था- ये दिल मांगे मोर, तो उनका दिल किसके लिए मांग रहा था? अपने लिए नहीं, किसी एक भाषा, धर्म या जाति के लिए नहीं, पूरे भारत के लिए; माँ भारती के लिए।

आइए, हम सब मिलकर ठान लें कि ये बलिदान, ये कुर्बानियाँ हम व्यर्थ नहीं होने देंगे। हम उनसे प्रेरणा लेंगे और उनके सपनों का भारत बनाने के लिए हम भी अपनी जिंदगी खपाते रहेंगे।

आज इस करगिल के विजय पर्व पर हम वीरों से प्रेरणा लेते हुए, उन वीर माताओं से प्रेरणा लेते हुए, देश के लिए अपने कर्तव्यों को हम अपने-आपको समर्पित करें। इसी एक भाव के साथ उन वीरों को नमन करते हुए आप सब मेरे साथ बोलिए-

भारत माता की - जय

भारत माता की - जय

भारत माता की - जय

बहुत-बहुत धन्यवाद।

वी.आर.आर.के./ एस.एच./ एन.एस.

(रिलीज़ आईडी: 1580654) आगंतुक पटल : 529

इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: Assamese , Marathi , Punjabi , Bengali , English

